HIN3B18b

(**सरस्वती**, १९१४ / extrait de Dalit vimars' kî bhûmikâ, Kanwal Bhâratî, Itihas Bodh Prakashan, Ilahabad, 2002)

हीरा डोम / अछूत की शिकायत

हमनी के राति दिन दुखबा भोगत बानी,
हमनी के सहेजे से मिनती सुनाइबि । (साहिब)
हमनी के दुख भगवनओं न देखता जे,
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबि ।
पदरी साहब के कचहरी मे जाइबिजा,
बेधरम होके रंगरेज बनि जाइबि । (अंगरेज)
हाय राम, धरम न छोड़त बनत बा जे,
बेधरम होके कैसे मुंहवा देखाइबि ।
खंभवा के फारि प्रह्लाद के बचवले जा,
ग्राह के मुंह से गजराज के बचवले ।
धोति जुरजोधना के भइया छोरत रहे,
परगट होके तहां कपड़ा बढ़वले ।
मरले रवनवां के पतले भभिखना के,
कानी अंगुरी पै धै के पथरा उठवले ।
कहवां सुतल बाटे सुनत न बाटे अब,
डोम जानि हमनी के छुए से डेरइले ॥
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइले जा,
पांके में से भरि भरि, पियतानी पानी ।
पनही से पिटि पिटि हाथ गोड़ तुरि दैलैं,
हमनी के इतनी काही के हलकानी ॥

स्वामी अछूतानंद "हरिहर" : मनुस्मृति हमको जला रही है (क़व्वाली)

(१८७९-१९३३)

निसदिन मनुस्मृति ये, हमको जला रही है ।
ऊपर न उठने देती, नीचे गिरा रही है ।
ब्राह्मण व क्षत्रियों को सबको बनाया अफसर,
हमको पुराने उतरन पहनो बता रही है ।
दौलत कभी न जोड़े, गर हो तो छीन लें वह,
फिर नीच कह हमारा दिल भी दुखा रही है ।
कुत्ते व बिल्ली, मक्खी से भी बना के नीचा,
हा शोक ! ग्राम बाहर हमको बसा रही है ।
हमको बिना मजूरी बैलों के संग जोते,
गाली व मार उस पर हमको दिला रही है ।
लेते बेगार, खाना तक पेट भर न देते,
बच्चे तड़पते भूखों, क्या जुल्म ढा रही है ।
ए हिन्दू कौम सुन ले, तेरा भला न होगा,
हम बेकसों को "हरिहर" गर तू रुला रही है ॥

ग़ज़ल चेतावनी पुरखे हमारे थे बादशाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ।
अब हिंद में हम हैं तबाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
इतिहास में जो नामवर, थे और पराक्रमी धनुर्धर ।
थे सभ्यता में अग्रसर, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
आए थे अर्य यहाँ नए, हमको हजम जो कर गए ।
छल-बल से वे मालिक भये, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
यदि खून में कुछ जोश हो, ओ बेहोश कौमो, जो होश हो ।
तुम क्यों पड़े ख़ामोश हो, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
अब भी हमारी राय लो, सभा आदि हिन्दू बनाय लो ।
इतिहास-ज्ञान जगाय लो, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
"हरिहर" समय अनुकूल है, अब भी न चेतो, भूल है ।
गहरी तुम्हारी भूल है, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

प्राचीन हिंदवाले (ग़ज़ल) हम भी थे कभी अफ़ज़ल, प्राचीन हिन्द वाले ।
अब हैं ग़ुलाम निर्बल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
इतिहास हैं बताते, है शुद्ध खूं हमारा ।
पर अब हैं शूद्र सड़ियल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
बाहर से क़ौम आई, बसने को जो यहाँ पर ।
सब ले लिया था छलबल, प्राचीन हिन्द वाले ॥
वे ही हैं द्विजाती ये, पर खल्त-मल्त हैं सब ।
छाती के बने पीपल, प्राचीन हिन्द वाले ॥

शूद्रो ग़ुलाम रहते, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
ज़ुल्मो सितम को सहते, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
अब तो ज़रा विचारो, सदियाँ गुज़र गई हैं ।
अपनी दशा सुधारो, सदियाँ गुज़र गई हैं ॥

वेद में भेद छिपा था (ग़ज़ल) वेद में भेद छिपा था, हमें मालूम न था.
हाल पोशीदा रखा था, हमें मालूम न था. वेद.
क़दीम वासी हैं हम, हिन्द के असली स्वामी.
हमारा राज यहाँ था, हमें मालूम न था. वेद.
विष्णु ने छलके बली, देश ले लिया जब से.
वंश ये नीचे गिरा था, हमें मालूम न था. वेद.
ब्राह्मणी पोथी पुराणों में निरी भर उलझन.
फसाना जाली रचा था, हमें मालूम न था. वेद.
मनु ने सख़्त थे क़ानून बनाए "हरिहर".
पढ़ाना क़तई मना था, हमें मालूम न था. वेद.